व्यंग्य

साहब का सम्मान

जो अख़बार में छपा- कल रात को स्थानीय बड़ा बाज़ार स्थित 'शांति भवन' में नगर के कपड़ा व्यापारियों की ओर से आयकर अफ़सर श्री देवेन्द्र कुमार 'सरसिज' का उनकी साहित्य सेवाओं के लिए सम्मान किया गया। 'सरसिज जी' का अभिनंदन करते हुए 'वस्त्र व्यापारी संघ' के अध्यक्ष सेठ बाबूलाल जी ने कहा कि 'सरसिज जी' एक महान कवि और लेखक हैं, उन्होंने उत्तम कविताओं से मां भारती की गोद भरी है। कालिदास और रवीन्द्र की महान परंपरा के कवि को पा कर यह नगर धन्य हो गया है। सम्मान का उत्तर देते हुए 'सरसिज' जी ने कहा कि मेरा सम्मान करके आपने वास्तव में कला की देवी मां सरस्वती का सम्मान किया है। मैं आपका अत्यंत आभारी हूं। मैं नहीं जानता कि किस प्रकार आपकी इस कृपा का बदला चुकाऊं।

इसके पश्चात स्थानीय प्रसिद्ध कवियों ने काव्य-पाठ किया। कपड़ा बाज़ार के अनेक व्यापारियों ने 'सरसिज' जी के सम्मान में कविताएं पढ़ीं। अंत में 'सरसिज' जी ने लगभग दो घंटे अपनी कविताओं का पाठ कर श्रोताओं का मनोरंजन किया। जलपान के उपरांत आयोजन समाप्त हुआ।

जो नहीं छपा-

श्री देवेन्द्र कुमार लगभग डेढ़ वर्ष पहले यहां आयकर अधिकारी के पद पर बदली में आये हैं। कविता का शौक़ है, उपनाम 'सरसिज' है। प्रति संध्या मातहत कर्मचारी उनके निवास स्थान पर इकट्ठे होते हैं और कवितायें सुनते हैं। पिछली दीवाली पर जो एक कविता लिखी थी, वह इस दीवाली तक सुनी गई। कविता के बोल हैं-'सजनी, तुम हो मुझसे दूर, दीप मैं कैसे जलाऊं?' इस पर उनकी पत्नी उनसे बहुत लड़ीं। बोलीं, 'यह हरामजादी कौन है, जो तुमसे दूर है?' सरसिज जी ने समझाया, 'यह तुम्हीं हो।' किसी कवि ने कहा है- 'पास रह कर दूर हो तुम।'

सरसिज जी को बड़ी शिकायत थी कि नगर में उनकी प्रतिभा की क़द्र नहीं होती। ईश्वर की कृपा से हाल ही में केंद्रीय आयकर कार्यालय से एक आवश्यक आदेश आया कि व्यापारियों की 'सख़्त' जांच हो, उन पर कर बढ़ाया जाए और सही आय छिपाने वालों पर सख़्त कार्यवाही की जाए। संयोगवश वस्त्र व्यापारी संघ के मंत्री सूरजमल का लड़का रसिकलाल भी कविता में रुचि रखता है। उसकी मित्रता 'सरसिज' जी के निजी सचिव ब्रजकिशोर 'ब्रजेंद्र' से है। 'ब्रजेंद्र' जी भी कविता लिखते हैं। 'ब्रजेंद्र' ने रसिकलाल को बताया, 'साहब की कमज़ोरी कविता है। उन्हें कवि के रूप में सम्मान दो, वे सब व्यापारियों से खुश हो जायेंगे और रियायत से काम लेंगे।'

गत सप्ताह वस्त्र व्यापारी संघ की एक बैठक में सर्वसम्मति से यह निश्चय किया गया कि आयकर अफ़सर देवेन्द्र कुमार 'सरसिज' को कवि-सम्मान देने में कोई हर्ज़ नहीं है। उन्हें यह बता देना अत्यंत आवश्यक है कि हम वस्त्र व्यापारी आपको 'बहुत बड़ा कवि' मानते हैं।

तदनुसार गत रात्रि को 'सरसिज' जी के सम्मान में 'शांति भवन' में वस्त्र व्यापारियों की ओर से एक आयोजन हुआ। हॉल में सैकड़ों वस्त्र व्यापारी, आयकर विभाग के कर्मचारी तथा कुछ स्थानीय कविगण उपस्थित थे। जिन व्यापारियों के आयकर के मामले चल रहे थे, उन्हें संघ की ओर से आदेश हो चुका था कि वे 'सरसिज' जी के अभिनंदन में किसी कवि से एक-एक कविता लिखा लायें और समारोह में स्वयं पढ़ें।

आरंभ में 'सरसिज' जी की साहित्यिक महत्ता का परिचय ब्रजेंद्र ने दिया। ब्रजेंद्र अभी अपने पद पर स्थायी नहीं हुए हैं। इस तथ्य को ध्यान में रख कर 'ब्रजेंद्र' ने कहा, 'मैंने वस्त्र व्यापारियों को बताया कि कितनी बड़ी प्रतिभा का नगर में आगमन हुआ है और नगर इस सौभाग्य को समझ नहीं रहा है...' यह सुनते ही वस्त्र व्यापारी संघ के अध्यक्ष उठ खड़े हुए और बोले, 'आप ग़लत कह रहे हैं। आपने हमें नहीं बताया। हमने ख़ुद उन्हें पहिचाना। हमारा लड़का रसिकलाल कविता वग़ैरह समझता है।'

दोनों में विवाद होने लगा। स्थिति को बिगड़ता देख 'सरसिज' जी ने दोनों को शांत किया।

तदुपरांत अध्यक्ष सेठ बाबूलाल ने 'सरसिज' जी का अभिनंदन करते हुए कहा, 'सरसिज जी का सम्मान करते हुए आज हमारे हृदय वैसे ही खिल रहे हैं, जैसे कि बनारसी सिल्क की साड़ी देख कर भारतीय नारी का हृदय खिलता है। आज हमारे यहां जो आपके स्वागतार्थ रंग-बिरंगे बंदनवार लगे हैं-वे केल्को, रेयन सिल्क, मद्रासी जीन, जार्जेट और फलालेन के हैं। वर्षों से हमारे मन में आपका सम्मान करने की इच्छा वैसे ही छिपी थी, जैसे कि बिक्री का सही हिसाब। पर यह आयोजन वैसे ही खिसकता जाता था, जैसे कपड़ा नापते समय गज पीछे खिसकता है।'

'आप कवि भी हैं, यह जानने में हमें डेढ़ साल लग गया और अभी भी यदि आयकर बढ़ाने का सरकारी आदेश न आता, तो क्या हम जान पाते। हर बात समय से होती है, जिस प्रकार शादी के मौसम में अधिक रेशमी कपड़ा बिकता है। समय आने पर हम सज्जनों को उसी तरह पहिचान लेते हैं, जिस तरह कि खाता-बही ज़ब्त होने पर बिक्रीकर इंस्पेक्टर के रिश्तेदारों को पहिचान लेते हैं।'

'नगर में और भी कई प्रकार के व्यापारी हैं-गल्ला व्यापारी, किराना व्यापारी आदि-आदि। पर वे यह नहीं पहचान सके कि आप कवि भी हैं। हम उन व्यापारियों से भिन्न हैं, केलिको कपड़ा भी तो लंक्लाट से भिन्न होता है। कला की पहिचान वस्त्र व्यापारियों को ही है। पिछले बिक्रीकर वाले साहब चित्र बनाते थे। उन्होंने शिव-पार्वती का एक चित्र 'शंकर विवाह' फिल्म के पोस्टर जैसा बनाया था। वह चित्र सेठ कालूमल जी ने अपने कैलेंडर पर छपाया था। उन पर बिक्रीकर-चोरी का एक बड़ा मामला चला पर शंकर जी की कृपा से सब ठीक हो गया। साहब, कलाकार-अफ़सर का सम्मान करने की हमारी गौरवमयी परंपरा रही है। हम व्यापारी हैं और अफ़सरों से हमारा निकट का संबंध रहता है, जैसे कि शुद्ध सिल्क का इमिटेशन सिल्क से। हम नहीं जानते कि कविता कैसी होती है। हम तो रेडियो पर 'दंत मंजन' और 'ताकत की दवाइयों' के बारे में ही कवितायें सुनते हैं। पर जब रसिकलाल ने कहा कि आप कवि हैं तो हमने मान लिया।'

'शहर में और जितने व्यापारी हैं उन पर भी आयकर बढ़ेगा, उनके हिसाब भी गड़बड़ हैं, कई पर तो मामले भी चल रहे हैं-पर उन्होंने इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं की कि आप कवि हैं। वे आपका अपमान कर रहे हैं और हम सम्मान कर रहे हैं। इस बात को कृपा कर न भूलें। हम खुले हृदय से आपका अभिनंदन करते हैं। जिन पर मामले चल रहे हैं, वे भी आज आपके अभिनंदन में स्वरचित कवितायें पढ़ेंगे। हमारा सौभाग्य है कि आप यहां पधारे। जैसे यहां पधारे, वैसे ही दुकानों पर पधारें और हमारा आदर ग्रहण करें-ऐसी प्रार्थना है।'

सम्मान का उत्तर देते हुए 'सरसिज' जी ने कहा, 'आज आपके स्नेह को अनुभव कर मुझे ऐसी खुशी हो रही है, जैसी आयकर-विभाग के अधिकारियों को तब होती है, जबकि रात के सन्नाटे में कोई व्यापारी लाल बस्ते में बंधी खाता-बही लेकर उनके घर जाता है। आज मुझे ऐसा लग रहा है मानो अपने सीनियर अफ़सरों को लांघ कर मैं तरक्की पा गया हूं। स्याहीसोख के नीचे जैसे ज़रूरी कागजात दबे पड़े रहते हैं, वैसे ही मेरे मन में यह इच्छा दबी थी कि कभी व्यापारियों के बीच कवि रूप में जाऊं। ऐसा संयोग देर से आया, इसका मुझे दुख नहीं है, क्योंकि हमारी शिक्षा-दीक्षा 'लालफीतावाद' में हुई जिसका प्रथम सिद्धांत देर करना ही है। आज मुझे ऐसा लग रहा है कि मानो अर्थ-सचिव ने हज़ारों अफ़सरों के बीच मुझसे अपनी लड़की की शादी में पानों का प्रबंध करने के लिए कह दिया हो।

मैं जानता हूं कि आपमें और अन्य व्यापारियों में बड़ा अंतर है। आप धार्मिक ट्रस्ट के समान हैं, जिस पर आयकर नहीं लगता। आपके द्वारा दिये गये इस मानपत्र को मैं मढ़वा कर अपनी बैठक में टांग लूंगा और यह उसी प्रकार मेरा पथ-प्रदर्शन करेगा, जिस प्रकार नये अफ़सर का पुराना बाबू पथ-प्रदर्शन करता है। मैं आपकी इस कृपा का क्या बदला चुकाऊं? इतना विश्वास दिलाता हूं कि आगे आपका ख्याल रखूंगा। आप लोग सरकार के नये आदेश से बिलकुल न घबरायें। मैं आपको हृदय से धन्यवाद देता हूं।

इस अवसर पर मैं अपने मुंशी ब्रजेंद्र को भी नहीं भूल सकता। उसी के परिश्रम का फल है कि मैं इस नगर में कवि के रूप में स्वीकार किया गया। यदि ब्रजेंद्र मेरा बाबू न होकर बिक्रीकर अफ़सर का बाबू होता तो कितना अनर्थ हो जाता। तब तो आज यहां बिक्रीकर अफ़सर का ही सम्मान होता। यह ब्रजेंद्र की भक्ति का ही परिणाम है कि आज मेरा सम्मान हो रहा है। मैं उसे स्थायी पद पर ही देखना चाहता हूं। मैं पुनः सबको धन्यवाद देता हूं। आप निश्चिंत रहें, चैन से कारोबार करें।'

इसके पश्चात कुछ कवियों ने अपनी रचनायें सुनाईं। अंत में 'सरसिज' जी ने लगभग दो घंटे तक अपनी कविताओं का पाठ किया। समस्त व्यापारी मंडली रस-विभोर हो गई।

लेकिन इतने सुंदर आयोजन के अंत में एक अवांछनीय घटना घट गई। फर्म रामगोपाल श्रीगोपाल के सेठ लपेटेलाल संघ के अध्यक्ष से भिड़ गये। लपेटेलाल बड़े क्रोध से चिल्लाये, 'कल साहब के सामने मेरी पेशी है। और आपने मुझे कविता नहीं पढ़ने दी। अपने सारे रिश्तेदारों से पढ़वा दी। मैंने भी तो यह कविता दस रुपये देकर एक कवि से लिखवाई थी। रुपये भी पानी में गये और इधर काम भी नहीं हुआ।'

साहब ने बीच-बचाव करके स्थिति को संभाला और सब सानंद विदा हुए।

- हरिशंकर परसाई

क्या मुख्यमंत्री जवाब देंगे?

एक राष्ट्रीय अख़बार में हर पखवाड़े हरियाणा के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा से सवाल-जवाब का नाटक किया जाता है। पाठक उनके सामने अपनी समस्यायें रखते हैं और वे उनका समाधान सुझाते हैं। लेकिन न तो सवाल ही ऐसे होते हैं जो व्यापक रूप से आम जनता के हितों से जुड़े हों, फिर भला जवाब कैसे होंगे। व्यक्तिगत समस्याओं के व्यक्तिगत समाधान और वह भी सिर्फ कहने भर के लिए। कोई ऐसा मूलभूत मुद्दा नहीं जिससे मुख्यमंत्री का साबका पड़े। दरअसल, यह अख़बार की चोंचलेबाजी है। वह मुख्यमंत्री से पाठकों की समस्याओं के जवाब दिलवा कर उनकी चमचागिरी करने के साथ ही अख़बार को भी पाठकों के बीच लोकप्रिय बनाना चाहता है। अगर मुख्यमंत्री के सामने जनता की मूलभूत समस्याओं से संबंधित सवाल रखे जायेंगे तो वे हर्गिज उसका जवाब नहीं दे सकते। उदाहरण के लिए क्या मुख्यमंत्री इस बात का जवाब दे सकते हैं कि राज्य में बिजली की कमी क्यों है? लोगों को पीने का साफ पानी उपलब्ध क्यों नहीं हो पा रहा है? सरकारी अस्पतालों में डॉक्टरों एवं अन्य स्टॉफ की कमी क्यों बनी हुई है? कारखानों में काम करने वाले मज़दूरों को सरकार द्वारा तय न्यूनतम मज़दूरी क्यों नहीं मिलती? स्कूलों में शिक्षकों की कमी क्यों बनी हुई है? और अगर शिक्षकों की कमी नहीं भी है तो पूरी कक्षायें क्यों नहीं लगती? शिक्षकों को अध्यापन के अलावा अन्यत्र ड्यूटियों पर क्यों लगाया जाता है? प्रदेश में कानून-व्यवस्था की हालत क्यों बिगड़ी हुई है? पुलिस लूट-मार को रोकने के बजाय क्यों स्वयं डकैतियां डालने में लगी हुई है? ईएसआई अस्पतालों और डिस्पेंसरियों में मज़दूरों एवं उनके आश्रितों का उचित इलाज क्यों नहीं हो पाता? ऐसी न जाने कितनी समस्याओं से संबंधित सवाल हैं जिनका उत्तर मुख्यमंत्री को देना चाहिए। पर एक तो सवाल करने वाले जनहित के उपरोक्त मुद्दों को नहीं उठाते और अगर इन्हें उठाया भी जाये तो मुख्यमंत्री के पास इन सवालों का कोई जवाब नहीं हो सकता। आज राज्य में भ्रष्टाचार अपने चरम पर पहुंच गया है। जनता का कोई काम किसी भी सरकारी विभाग में बिना रिश्वत दिये नहीं होता। प्रशासनिक व्यवस्था पूरी तरह पंगु हो चुकी है। पुलिस स्वयं अपराधों को बढ़ावा देने में लगी हुई है। ठेकेदारी प्रथा के तहत मज़दूरों का भीषण शोषण हो रहा है। पर मुख्यमंत्री सब कुछ जानते हुए भी इन समस्याओं के प्रति अनजान बने हुए हैं। वे हरियाणा नंबर-वन का गीत गाने में लगे हुए हैं। पर आम जनता लुट-पिट रही है। उसकी समस्यायें कम होने के बजाय और भी बढ़ती ही जा रही है। क्या मुख्यमंत्री इन सवालों का जवाब देंगे? आज हरियाणा देश के विकसित राज्यों में गिना जाता है। प्रति व्यक्ति आय के मामले में यह देश में दूसरे नंबर पर है। बावजूद इसकी ऐसी स्थिति है। ऐसी स्थिति क्यों है और राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था में कहां चूक है व इसके लिए जिम्मेवार कौन है? मुख्यमंत्री को इन सवालों का जवाब देना चाहिए।

पुलिस स्वयं अपराधों को बढ़ावा देने में लगी हुई है। ठेकेदारी प्रथा के तहत मज़दूरों का भीषण शोषण हो रहा है। पर मुख्यमंत्री सब कुछ जानते हुए भी इन समस्याओं के प्रति अनजान बने हुए हैं। वे हरियाणा नंबर-वन का गीत गाने में लगे हुए हैं। पर आम जनता लुट-पिट रही है। उसकी समस्यायें कम होने के बजाय और भी बढ़ती ही जा रही है। क्या मुख्यमंत्री इन सवालों का जवाब देंगे?

महत्वपूर्ण तथ्य

भारत सरकार की विशेषज्ञ समिति ने नई प्रवृत्ति के घातक बैंगन बीज को स्वीकृति दे कर जीएम बीज कंपनियों के लिए राहें खोल दी हैं। लेकिन व्यापक चिंता-विरोध को देखते हुए सरकार ने इस पर राय-एतराज मांगा है।

अति घातक परमाणु बिजली घरों के लिये आतुर भारत सरकार यूरेनियम के लिए हाथ-पैर मार रही है। इस संदर्भ में लोगों के भारी विरोध के बावजूद मेघालय में यूरेनियम के खनन की तैयारी की अनुमति राज्य सरकार ने दे दी है। यूरेनियम और इसके कचरे के वर्तमान और भविष्य में घातक प्रभावों को जानते खासी छात्रों ने इसका व्यापक विरोध शुरू कर दिया है।

गुजरात के भावनगर ज़िले में परमाणु बिजली घर बनाने का विरोध शुरू हो गया है। गांवों के लोगों ने बेदखली, हवा-पानी, मिट्टी जहरीली कर दिये जाने, एटम बमों के फटने जैसे खतरों के दृष्टिगत परमाणु बिजली घर लगाने का विरोध शुरू कर दिया है।

हरियाणा सरकार फतेहाबाद ज़िले में परमाणु बिजली घर लगाने की स्वीकृति को बड़ी सफलता के रूप में प्रचारित कर रही है, जबकि चार गांवों के लोगों ने पता चलते ही परमाणु बिजली घर का विरोध शुरू कर दिया है।

फरीदाबाद, ओखला तथा गुड़गांव में फ़ैक्ट्रियों में काम करते 70-75 प्रतिशत मज़दूर अदृश्य हैं। कारखानों में काम कर रहे तीन-चौथाई मज़दूर कंपनियों तथा सरकारी दस्तावेज़ों के अनुसार फ़ैक्ट्रियों में होते ही नहीं हैं। 'ईएसआई नहीं' का अर्थ यही है। अस्सी-पचासी प्रतिशत फ़ैक्ट्री मज़दूरों को दिल्ली व हरियाणा सरकारों द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं दिया जाता। फ़ैक्ट्रियों में मज़दूरों द्वारा 12 घंटे प्रतिदिन काम करना सामान्य बात है। और 98-99 प्रतिशत ओवरटाइम दिखाया ही नहीं जाता है तथा भुगतान दुगनी दर के बजाय सिंगल दर से किया जाता है।

- फरीदाबाद मजदूर समाचार, नवंबर 2009 से